यु.जी.सी.लघु शोध परियोजना

नवद्दोतरी हिंदी साहित्य में धर्मनिरपेक्षता

(हिंदी उपन्यासों के विशेष संदर्भ में)

Sanction Letter No. MRP F.23.1109/14 (WRO)

प्रस्तुत

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

वेस्टर्न रिजनल ऑफिस
गणेशखिंड पुणे – ४११ ००७
महाराष्ट्र (भारत)

शोधार्थी

डॉ. कृष्णा नाथा गायकवाड

एम.ए., एम.फिल.,पीएच.डी.,नेट,सेट

सहाय्यक प्राध्यापक
श्रीमती गोदावरीबाई गणपतराव खडसे महाविद्यालय
मुक्ताईनगर, जिला - जलगांव

श्रीमती गोदावरीबाई गणपतराव खडसे महाविद्यालय
मुक्ताईनगर, जिला - जलगांव

ई-मेल :- info@khadsecollege.in
संपर्क :- 91 (0) 02583-234408

मई - २०२२

शोध सारांश

नवद्दोतरी हिंदी साहित्य में धर्मनिरपेक्षता

हिंदी उपन्यासों के विशेष संदर्भ में (लघु शोध परियोजना) (UCG MRP)

शोध सारांश :

साहित्य समाज का दर्पण होता है यही हम सदियों से सुनते आ रहे हैं। और यह बिल्कुल सच भी है।साहित्य ने मनुष्य को हमेशा सही राह दिखाने की कोशिश की है। भारत देश हो या विश्व का कोई भी देश हर देश में साहित्य ने मनुष्य को सही राह दिखाने की ओर मार्गदर्शक बनकर सही सलाह दी। साहित्य से मनुष्य को नई सोच मिलती है और वही सोच मनुष्य को अंधेरे से रोशनी की ओर लेकर आती है।

वर्तमान में विश्व के कई देशों में भारत देश को धार्मिक और बहुभाषिक राष्ट्र के रुप में देखा जाता है। इस देश में कई धर्म, संप्रदाय, पंथ के लोग सदियों से एक दूसरे के साथ अपना जीवन सुख शांति से जी रहे हैं । समग्रता से देखा जाए तो प्राचीन काल से लेकर आज तक हर मनष्य धर्म के प्रति और संप्रदाय के प्रति एकनिष्ठ होकर जीवन जी रहा है । इसी देश में सदियों से लेकर आज तक ऊँच-नीच का भाव, संप्रदाय का भाव हमेशा ही देखने को मिलता है । हर कोई खुद के धर्म को श्रेष्ठ मानकर दूसरे धर्म को कनिष्ठ मानता है । इसी स्थिति का फायदा अनेक विदेशियों ने उठाया है । डच, पोर्तुगिज, खालासी, इस्लाम, अंग्रेज आदि लोगों ने हिंदुस्तान में व्यापार किया और इस देश की नींव का सोचकर परिक्षण किया और छोटी-छोटी चिजों का अध्ययन करके इस देश को गुलाम बनाया । गुलाम बनाने के लिए सबसे जादा फायदा इस देश में धर्म, संप्रदाय, जातीयता, उँच-नीच का फासला होने से उन्हें कोई कठीनता नहीं आया । १२वीं सदी से लेकर १८वीं सदी तक हिंदुस्तान पर विदेशिओं ने ही राज्य किया और १६ वीं सदी के उत्तरार्ध में अंग्रेजों ने इस देश को गुलाम बनाया । अंग्रजों ने इस देश पर १५० वर्षे तक राज किया । केवल धार्मिकता, मतभेद और जातीयता की दूरी इसमें आडे थी ।

कई हिंदुस्तानिओं को अपने प्राणों की आहुति इस देश को आजाद करने के लिए देनी पड़ी और सन १९४७ में देश आजाद हुआ । देश में हर जगह खुशी की लहर फैल गई थी लेकिन चंद घंटे बाद ही आजादी की खुशी मातम में बदल गयी । देश में हर जगह दंगें शुरु हुये

। हिंदु और मुस्लिम एक दूसरे के जान के दुश्मन बन गये । देश में हर जगह मातम शुरु हुआ । कई लोगों को सारे आम कत्ल किया गया । इस बैर ने धर्म और संप्रदाय को जन्म दिया और पाकिस्तान का निर्माण हुआ । राजनेताओं ने अपना फायदा उठाया और धर्म के नाम पर राजनीति शुरु की । आज के दौर में राजनेता अपने फायदे के लिए समाज को आपस में लड़वाकर भ्रष्टाचार फैला रहे हैं । इसी राजनीति की वजह से देश की सुख शांति भंग हुई है ।

इस देश को स्वतंत्र और समृध्द बनाने में कई महान व्यक्तियों ने, समाज सुधारकों ने अपने प्राणों की आहुति दी है । आज देखा जाए तो यह देश सभी दृष्टीओं से समृध्द है । लेकिन कुछ लोग अपने फायदे के लिए धार्मिक युध्द, प्रांतवाद, भाषावाद के नाम पर समाज में आतंक फैला रहें हैं । जाति-धर्म के नाम पर राजनीती कर रहे हैं। महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, भगत सिंग इस देश में सुख शांति लाना चाहते थे, लेकिन आज देखने को मिलाता है कि, हर कोई अपनी रोटी सेंकने के लिए किसी दूसरों का घर जला रहे है । एक दूसरों को भडकाकर देश की शांति को तहस-नहस कर रहें है ।

महात्मा गांधी, पंडीत नेहरु, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आदि नेताओं का सपना यह था कि भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बने, बन तो गया लेकिन जो स्थितियाँ थी उसमें कोई बदलाव नहीं आया । भारतीय संविधान के अंतर्गत ४२ वे संशोधन (१९७६) ने भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बना दिया । लेकिन जो आजादी के पहले स्थितियाँ थी उसमें कोई बदलाव नहीं आया । भारतीय संविधान के अंतर्गत धर्मनिरपेक्षता को सबसे जादा महत्व दिया गया है । आज केवल भारत के लिए ही नही सारी दुनिया में धर्मनिरपेक्षता का सवाल बहुत ही महत्वपूर्ण है । धर्मनिरपेक्षता के सिवा किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व बहुत दिनों तक बरकरार नहीं रह सकता । राष्ट्र कितना भी प्राचीन क्यों न हो आज हर राष्ट्र का अस्तित्व केवल धर्मनिरपेक्षता पर निर्भर करता है । तमाम देशों के अधिकांश राज्यों में स्थित जो राज्य प्रभावी है, वह लोकतांत्रिक या जनतांत्रिक जनप्रणाली है । यानी आज दूनिया का हर राष्ट्र अपने को जनतांत्रिक या लोकतांत्रिक मानता है । किंतु जहाँ-जहाँ लोकतांत्रिक शासन प्रणाली नहीं है, वहाँ धर्मनिरपेक्षता की व्यवस्था भी नहीं है।

भारत में जातीवाद और साम्प्रदायिकता के कारण पिछले कई सालों से जाति युध्द होते आए है । जगह-जगह पर साम्प्रदायिक युध्द, दंगे भडकाये गये हैं । आयोध्या में बाबरी मस्जिद का ध्वंस सारी राष्ट्र की एकात्मिक भावनाओं को तोडनेवाला था । महाराष्ट्र में मालेगाव जिले में हिंदु-

मुस्लिम दंगल और गुजरात में सन् २००२ में हिंदु-मुस्लिम दंगल राष्ट्रीय भावनाओं को तोडनेवाली थी । कई जगह इसके कारण धार्मिक युध्द हो गये थे और जातिवादने एक नया जन्म लिया था । जिससे मानवीय भावनाओं और मानवीयता का ऱ्हास हुआ । इसका फायदा राजनेताओं ने राजनीति के लिए एक दूसरें को आपस में ही लडवाकर अपना स्वार्थ देखा था ।

वैसे देखा जाए तो भारत में स्वतंत्रता के बाद खुशी की लहर फैली गयी थी । लेकिन देश के बँटवारें ने भारत और पाकिस्तान में दंगे शुरु किये और हिंदु-मुस्लिम एक दूसरे की जान के दुश्मन बन गये । स्वतंत्रता के पहले सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलनेवाले लोगों को क्रूर और एक दूसरे का दुश्मन बनाया । धर्मवाद और जातिवाद इतना फैल गया था कि हर कोई धर्म के लिए जाति के लिए मर मिटने के लिए तैयार था । इन सभी स्थितियों को देखकर हिंदी साहित्यिकों ने जनमानस भावना जागृत रखने के लिए कलम उठाई और अपनी लेखनी के माध्यम से धर्मनिरपेक्षता की जरुरत को समाज में स्थापित करने के लिए साहित्य लिखा । उन्होंने देखा कि स्वतंत्र्यता के बाद भारत में निराशा छाई थी । आम लोगों ने आजादी से पहले जो सपने देखे थे उनमें मायुसी छाई थी । भ्रष्ट व्यवस्था ने आम जनता को अपना शिकार बनाया था । धार्मिक कट्टरता ने नया रुप लिया था । इन्हीं स्थितियों का हिंदी साहित्य पर नया प्रभाव पड़ा । बहुत से लेखकों ने अपनी लेखनी में धर्मनिरपेक्षता को नया देने की शुरुवात की । यशपाल, विष्णु प्रभाकर, भीष्म साहनी, कमलेश्वर, मोहन राकेश, अब्दुल बिस्मिला, दूधनाथ सिंह, नासिरा शर्मा, मंजुर एहतेशाम, सैय्यद जगम इमाम, गीतांजली श्री आदि लेखकों ने अपनी लेखनी के माध्यम से धर्मनिरपेक्षता को लोगों तक पहुचाना शुरु किया। 'तमस', 'कितने पाकिस्तान', 'झूठा सच', 'राष्ट्रद्रोही', 'आखिरी कलाम', 'हमारा शहर उस बरस', 'दोजख', 'सुखा बर्गत', 'अंधेरे बंद कमरे', 'अपवित्र आख्यान' आदि उपन्यासों में धर्मनिरपेक्षता को जागृत करने की कोशिश लेखकोंने की है । धर्म, जाति, सम्प्रदाय, राजनीति आदि विषयों पर उन्होंने आवाज उठाई है और अपने लेखनों के माध्यम से समाज में जागृति लाने की कोशिश की है । इन बातों पर चर्चा करने से पहले धर्मनिरपेक्षता का स्वरुप समझना आवश्यक है ।

जब मैने इस लघूशोध परियोजना पर काम करना शुरु किया तो सबसे पहिले मैने हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ लेखक कमलेश्वरजी का महत्वपूर्ण उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' इस उपन्यास को पढ़ने की शुरुआत की। मन में कई प्रश्न उपस्थित हुए यह उपन्यास नहीं था, बल्कि भारत देश का

५००० वर्षों का इतिहास था। जिसमें कमलेश्वर ने भारत की पूरी त्रासदी सामने रखी थी। भारत में जितने भी युद्ध हुए थे उस पर उपन्यास में कई प्रश्न उठाए थे और यह संदेश भी दिया था कि युद्ध से भले ही एक पक्ष की जीत होती है पर वह जीत कर भी सुख शांति से नहीं रह सकता। उस देश का या उस राज्य का साम्राज्य लड़खड़ाया जा सकता है। उन दोनों के राज्यों में सुख–शांति कभी भी समृद्धि बरकरार नहीं रह सकती। ऐसे ही सुंदर धर्मनिरपेक्ष विचार लेखक कमलेश्वर जी ने सामने रखे थे। ऐसे कई उपन्यासों को पढ़कर मन में जिज्ञासा उठी की मेरे लघु शोध प्रबंध का विषय "नवद्दोत्तरी हिंदी साहित्य में धर्मनिरपेक्षता" (हिंदी उपन्यासों के विशेष संदर्भ में) ही होगा। इस विषय का अध्ययन करना शुरु किया।

इस लघु शोध प्रकल्प विषय का अध्ययन करते समय मैंने इसे पांच अध्ययनों में विभाजित किया है–

प्रथम अध्याय–धर्मनिरपेक्षतासैद्धांतिक विवेचन :

प्रथम अध्ययन के अंतर्गत " धर्मनिरपेक्षता सैध्दातिक विवेचन " का समग्र अध्ययन किया हैं | भारतीय तथा पाश्चात्य देशों में धर्मनिरपेक्षता किस तरह से बरकरार है इसका समग्र अध्ययन इस अध्यायके अंतर्गत किया गया हैं और इस अध्याय के अंतर्गत धर्मनिरपेक्षता का स्वरुप धर्मनिरपेक्षता का अर्थ, धर्मनिरपेक्षता की परिभाषा और धर्मनिरपेक्षता की विशेषताओ को स्पष्ट किया हैं | इसी के साथ प्राचिन कालीन धर्मनिरपेक्षता, मध्यकालीन धर्मनिरपेक्षता और आधुनिक कालीन धर्मनिरपेक्षताओ को व्यक्त किया हैं | अंत में धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र, धर्मनिरपेक्षता की परंपरा, हिंदी साहित्य में धर्मनिरपेक्षता आदि घटकों का विवेचन एंव विश्लेषन किया है |

द्वितिय अध्याय के अंतर्गत ' वर्तमान समय में धर्मनिरपेक्षता की आवश्यकता ' इस विषयपर समग्र अध्ययन किया हैं, जिसमें वर्तमान राजनीति में धर्मनिरपेक्षताकी आवश्यकता वर्तमान समय में धर्म में धर्मनिरपेक्षता की आवश्यकता, वर्तमान समय में सामाजिक स्थिती में धर्मनिरपेक्षताकी आवश्यकता, सांस्कृतिक, जातियता, मीडिया, शिक्षा, भारतीय परंपरा, धार्मिक स्थले, आदि घटको में धर्मनिरपेक्षता की आवश्यकता हैं | तभी संपूर्ण देश संमृध्द एंव सुरक्षित रह सकता हैं | इसका समग्र अध्ययन इस अध्याय के अंतर्गत किया हैं |

तृतिय अध्याय के अंतर्गत धर्मनिरपेक्षता के संदर्भ में नवद्दोत्तरी हिंदी साहित्य में धर्मनिरपेक्षता की आवश्यकता इसमे नवद्दोत्तरी हिंदी उपन्यास और उपन्यासकार इस अध्याय के अतंर्गत रखे हैं और उनकी जानकारी इस अध्याय के अंतर्गत प्रस्तुत की हैं | जिसमे नब्बे दशक में धर्मनिरपेक्ष साहित्यकार - जिंदा मुहावरे - नाशिरा शर्मा, कितने पाकिस्तान - कमलेश्वर, त्रिशुल - शिवमृर्ती, दोज़ख - सैय्यद जैग़म इमाम आदि लेखकों के उपन्यासों का विश्लेषन किया हैं |

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत नवद्दोत्तरी हिंदी साहित्य में धर्मनिरपेक्षता (उपन्यासों के विशेष संदर्भ में) का चित्रण इस अध्याय के अंतर्गत किया हैं | जिसमें प्रस्तुत उपन्यासकारोने अपने उपन्यासों में धर्मनिरपेक्षता का चित्रण किस तरहसे किया हैं यह संदर्भ के साथ विश्लेषित किया हैं |

पंचम अध्याय उपसंहार के अंतर्गत सभी शोध कार्य का लेखा जोखा प्रस्तुत किया है और अंतिमत: शोध निष्कर्ष के साथ संदर्भ ग्रंथ सूची को प्रस्तुत किया है|

शोधार्थी
डॉ. कृष्णा नाथा गायकवाड
एम.ए., एम.फिल.,पीएच.डी.,नेट,सेट

सहाय्यक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
श्रीमती गोदावरीबाई गणपतराव
खडसे महाविद्यालय
मुक्ताईनगर, **जिला - जलगांव**